25–3–67 ओमशांति रात्रीक्लास

तुम बच्चे जानते हो कि हम हैं ईश्वरीय सम्प्रदाय।गाया जाता है संग तारे कुसंग बोड़े।अभी तुम बच्चे अनुभवी हो। ब्राह्मण अनुभवी हैं। उस तरफ है शूद्र सम्प्रदाय। वो जानते नहीं है।स्वच्छ बुद्धि और मलेच्छ बुद्धि। इस समय है भक्ति का राज्य। यहां है ईश्वर का राज्य। इस समय तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय हो। ईश्वर जब कहा जाता है तो मनुष्यों की बुद्धि चली जाती है उपर। तुम बच्चे जानते हो कि हम ईश्वरीय सम्प्रदाय हैं। ईश्वरीय सम्प्रदाय, आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय। अभी तुम बच्चे ईश्वरीय सम्प्रदाय होने कारण गुप्त हो। ईश्वर है निराकार। तुम बच्चे भी अपने को निराकार समझते हो। ईश्वर ने तुमको समझाया है। वो तो कुछ समझ नहीं सकते। तुम भी शूद्र सम्प्रदाय हो। अब ब्राह्मण बने हो। वो है भक्तिमार्ग। ज्ञान मार्ग को बिल्कुल नहीं जानते। उनका कोई दोष नहीं है। तुम जानते हो साधु–सन्यासी गुरू लोग अनेक प्रकार के हैं। गांवों में भी साधु–संत आदि रहते हैं। गुरुओं को माथा टेकते हैं। जितना बड़ा नामी–ग्रामी गुरू होता है उतने ही बड़े2 लोग सिर झुकाते हैं। वो हैं शूद्र बुद्धि पतित आसुरी सम्प्रदाय। तुम समझते हो कि हम पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं। पारलौकिक बाप हमको पुरुषोत्तम बना रहे हैं। यह तुम जानते हो फिर भी भूल जाते हो।चित्र में तुम समझा सकते हो।वो पुरुषोत्तम यह कनिष्ट। यह दुनियां ही तमोप्रधान तुच्छ बुद्धि है। ...कितने स्वच्छ स्वर्ग के मालिक हैं। यह नर्कवासी तुच्छबुद्धि है। चित्र भी कितना अच्छा बनाया हुआ है समझाने के लिए। नई दुनियां को पवित्र ,पुरानी दुनियां को अपवित्र कहा जाता है। बाप ने समझाया है वहां यथा राजा–रानी तथा........है। यहां तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। अभी तुम बच्चे सारी दुनियां से बिल्कुल न्यारे हो। तुम मुख से कहते हो सभी ऐप बुद्धि हैं। ईश्वर भी कहते हैं यह है ईश्वरीय सम्प्रदाय, यह है आसुरी सम्प्रदाय। इनको तीसरा नेत्र मिला हुआ है ज्ञान का। तीसरा नेत्र दिव्य चक्षु ,दिव्य बाप ही दे सकते हैं। अब तुमको कहते हैं कि हमको निश्चय कराओ कि कैसे बाप आया हुआ है। बोलो हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण हैं। ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं। रचता है नई दुनियां का, नये धर्म का।विनाश कराते है। पुरानी दुनियां का। तुमको तो एडॉप्ट करते हैं। गायन है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण सम्प्रदाय रचते हैं। बाप आते हैं ना। हमको ब्राह्मण बनाते हैं ना देवता बनाने के लिए। इतने ढेर बच्चे हैं। बाप ने हमको ब्रह्मा द्वारा रचा। फिर हमको कहते हैं कि मुझे याद करो। यह बताना बहुत जरूरी है। शिवबाबा परमपिता परमात्मा सबका बाप कहते हैं मुझे याद करो। मुझे पतित–पावन कहते हैं ,लिबरेटर कहते हैं। तो बाप कहते हैं हे बच्चों, आत्माओं।अब कहेंगे तो जरूर शरीर द्वारा ही ना।ब्रह्मा द्वारा ही कहेंगे कि मुझे पतित–पावन कहते हैं सो ही मैं युक्ति बताता हूॅ। अपने को आत्मा समझ मामेकम याद करो। सभी को बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो जो तुम्हारे में सतो,रजो ,तमो की खाद पड़ गई है वो निकल जावेगी। भगवान मनुष्य को नहीं कहा जाता है। सदैव कहना चाहिए कि रुहानी पिता कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। सभी के लिए यह पैगाम मिलता है।नई दुनियां में पापात्मा होती ही नहीं है।धाम ही तीन है। शांतिधाम ,सुखधाम और दुःखधाम। तो है तो बहुत सहज।बोलो बाप कहते हैं मनमनाभव। अपने को आत्मा समझो मुझ बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। इस समय सब तमोप्रधान हैं।यह है आयरन एज्ड वर्ल्ड।सभी को बाप का परिचय देना है। यही मुख्य बात भूल जाती है। फिर वो कहते हैं कि प्रमाण चाहिए। अरे, बाप ने तो कल्प पहले भी कहा था। यह वो ही संगमयुग है। मानुष्य ते देवता..........यह भी गायन है। सतयुग में सभी हैं पावन। इस एक बात पर ही अच्छी रीति समझावेंगे तो वो भी खयाल करेंगे। बाप हमको ऐसा कहते हैं हैं।बाबा अक्षर बहुत मीठा है।बाप जरूर ब्रह्मा द्वारा ही कहते हैं। मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। यह बिल्कुल कॉमन अक्षर है। बाप कहते हैं इन गुरुओं आदि को अब छोड़ो। सर्व का सदगति दाता एक ही बाप है। पतित–पावन एक ही ठहरा ना। बाकी जो भी मनुष्यमात्र हैं वा सभी पतित

हैं। बाबा अक्षर बहुत मीठा है। बाबा हमको यह कहते हैं। हम अपने को आत्मा समझते हैं। हम शरीर नहीं हैं। हम आत्मा का बाप परमात्मा है। यही एक बात सुनाने से जास्ती सुनाने की दरकार नहीं रहेगी। जब तक बाप को नहीं समझते हैं तो प्रश्न पूछते ही रहेंगे। 84का चक्र समझाना भी बहुत सहज है। पहला2 संदेश यही है। बाप ही बच्चों को कहते है।सदगति का वर्सा उनसे ही मिलता है।यह है इम्प्योर दुनियां।प्योर थी तो वाइसलैस थी।अभी विषयस है। वो है शिवालय। नाम तो पवित्र है ना। नई दुनियां को शिवालय कहते हैं।संगम पर बाप ने मनुष्य से देवता बनाया है। धीरे2 समझते जावेंगे। राजाई स्थापन करने में समय तो लगता है ना।कितने बिछुड़े हुये हैं।कहां2 से निकल आये हैं और निकल आने हैं। कोई विलायत में है,कोई कहां है।सब निकल आने हैं। बच्चे जानते हैं कि हम सर्विस करते रहते हैं। अधीर्य होने की बात नहीं है। ऐसे नहीं कि प्रदर्शनी में इतना माथा मारा क्या निकला?ऐसे हार्टफेल नहीं होना चाहिए।एक बाप की याद और सर्विस।बुद्धि में बैठा रहना चाहिए कि हमें सतोप्रधान जरूर बनना है।बुद्धि में यही तात लगी हुई होनी चाहिए। माशूक कहते हैं आशिकों को कि माशूक को याद रखो। प्यार से कहते हैं कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावें। यह आखिर भूल क्यों जाते हैं?माया भुलाती ही है तो फिर याद करो। लड़ाई इसमें है। उनका तो यह धर्म है कि तुमको याद से भुलाना।तुम जानते हो आधा कल्प हम याद करते आये हैं। इसमें विचार—सागर—मंथन तो करना ही है। यह संदेश सभी को पहुंचाना है। भक्तिमार्ग में कितना अहंकार है।इसने तो बहुत गुरू किये और पूरे 84जन्म लिये हैं। अब वापस जाने में तो खुशी होती है। बार2 गांठ बांध देनी चाहिए बाप के याद करने की। फिर कहां विकार आदि की तरफ बुद्धि जा नहीं सकती। यह है गुप्त मेहनत। मुख्य है याद। उस पर बच्चों का ध्यान बहुत कम है। पहले2 बाप का परिचय देना चाहिए। बाप कहते हैं मामेकम याद करो। इन बातों पर कोई आनाकानी नहीं करेंगे। नम्बरवन पावन सो ही फिर 84जन्म लेकर पतित बनते हें यह राजयोग बाप बिना कोई सिखा नहीं सकते हैं। कृष्ण तो बच्चा है।हम राजयोग ऋषि हैं। सन्यासियों को घर—बार छोड़ जाना होता है। बाप कहते हैं एक जन्म पवित्र बनने लिए पावन दुनियां का मालिक बन जावेंगे। वो कहते हैं कि यह नहीं हो सकता है।हम कहते हैं वाह यह तो बहुत सहज है।यह तो है ही मृत्युलोक। अमरलोक में जाना है। तुम ब्र.कु.कु. हो।बहन—भाई हो गये हो ना। यह है युक्ति। हम ब्राह्मण बहन—भाई अपवित्र नहीं हो सकते हैं। हम पवित्र बन जावेंगे तो पवित्र दुनियां भी चाहिए। इसीलिये अपवित्र दुनियां का विनाश होता है। बाप ने खुद कहा है कि यह रावण राज्य आसुरी सम्प्रदाय है। अंधश्रद्धा से सबकी भक्ति करते रहते हैं। पहले2 बाप का परिचय देना है। नही ंतो इतना असर नहीं होता है। बेहद का बाप है उनसे ही हमको वर्सा मिलता है। अभी वो समय है। घड़ी पर ले आना चाहिए। अभी हम वापस जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। थोड़ा2 इशारे से समझाना चाहिए।रग भी देखनी होती है। तुम बच्चों को नेष्ठा के प्रोग्राम बहुत आते हैं ;क्योंकि सारे दिन में याद नहीं करते हो। भूल जाते हो।इसलिए प्रोग्राम देते हैं कि कुछ विकर्म विनाश हो जावें।प्रदर्शनी लिए भी पुरुषार्थ चलता है तो अपने को पावन बनाने लिए भी पुरुषार्थ चलता है। बच्चों को बाप मत देते रहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो ;परंतु अपने माशूक को याद करो। वो आशिक माशूक भी पवित्र रहते हैं। गंदे नहीं होते हैं। यहां तो है आत्मा और परमात्मा की बात। बाप कहते हैं आधा कल्प के तुम आशिक हो मुझ माशूक बाप के।यह भी समझाने के लिए ही कहा जाता है। बाप से ज्ञान सुनते रहते हो। बाप सब वेदों—शास्त्रों का सार जानते हैं। इनमें प्रवेश कर समझाते हैं।प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से सुनावेंगे तो जरूर प्रवेश ही करेंगे ना। नहीं तो कैसे बालेंगे?तुम हमारे मुख से बोल सकेंगे?जरूर आत्मा ही प्रवेश करेगी ना। तो बाप कहते हैं हम इनमें प्रवेश कर शास्त्रों का सार सुनाता हूॅ। वो है सारा भक्तिमार्ग। अब तुमको अव्यभिचारी याद में रहना है।यही मेहनत है। जितना हो सके बाप को ही याद करते रहो। अच्छा बेहद के मात—पिता बापदादा का आज्ञाकारी सपूत श्रीमतधारी बच्चों को यादप्यार बाद गुडनाइट। ओम